**Vagisha International Multidisciplinary Research Journal**
**(International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal)**
**Volume-01, Issue-03, June-2026| ISSN: 3139-2776 (online)**
**Available online at:https://vimrj.com/**
**DOI: https://doi.org/10.67185/vimrj.v1i3.24**

# जनार्दन प्रसाद पाण्डेय विरचित सौरभेयी में लोक चेतना

**अनीता यादव,[1] डॉ. राहुल[2]**

[1]शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, तिलकधारी सिंह पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर
[2]शोध निर्देशक, संस्कृत विभाग, तिलकधारी सिंह पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर

e-mail : sanskritsecret@gmail.com

**Received:** 16 May 2026 | **Accepted:** 20 May 2026 | **Published:** 25 June 2026

## सार

प्रो० जनार्दन प्रसाद पाण्डेय मणि जी का जन्म 02 अक्टूबर 1962 को शकरा ग्राम जौनपुर जनपद में हुआ था। इनकी शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हुयी थी, आपने वर्ष 1984 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की एम०ए० (संस्कृत) की परीक्षा में विश्वविद्यालयीय वरीयता सूची में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया, आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से नाट्यशास्त्र में उपलब्ध काव्यशास्त्रीय तत्वों का समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर डॉक्टर ऑफ फिलासॅफी (डी० फिल०) की उपाधि अर्जित किया। इसके बाद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय लैसंडॉन जयहरिखाल पौड़ी गढ़वाल में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुए, इसके बाद केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय गंगानाथ झा परिसर इलाहाबाद में रीडर के रूप में नियुक्त हुए तथा सम्प्रति में वही प्रोफेसर एवं अध्यक्ष साहित्य विभाग पद को अलंकृत कर रहे हैं। सौरभेयी एक संस्कृत गीतिकाव्य है, इसमें तैतिस (33) एवं (25) अन्योक्तियों तथा प्रयाग शिखरिणी गंगा शिखरिणी शीर्षक से कुछ पद्य है। इसका प्रकाशन 2019 वैशम्यायन प्रकाशन इलाहाबाद से हुआ। कवि ने सौरभेयी गीतिकाव्य में स्वोपज्ञ छन्द के द्वारा जीवन के विविध मर्म को विविध विषयों के साथ धर्म का अनुसरण करते हुए अभिव्यक्त किया है। इस गीतिकाव्य में मणि जी ने स्वोपज्ञ छन्द के अतिरिक्त कवि द्वारा शिखरिणी एवं मुक्तक छन्दों का भी प्रयोग यदा–कदा परिलक्षित होता है।

**मुख्य बिन्दुः** राष्ट्रीय समस्या, लोकविडम्बना, रूपसौन्दर्य, प्राकृतिक परिवेश, वैश्विक परिवेश।

**शोध प्रविधि :** प्रस्तुत शोध की विधि सोदाहरण एवं वर्णानात्मक है।

कवि ने इस सौरभेयी गीतिकाव्य को अपने ज्येष्ठ पुत्र स्व० धर्मेन्द्र पाण्डेय को सस्नेह समर्पित किया है तथा उनकी स्मृति में कई गीतों की संकलना भी की है। हे पुत्र ! तुम्हारी स्वर्गयात्रा में मेरी सारस्वती रति चली गयी, मेरी स्मृति में तुम्हारी मीठी रसस्निग्ध मधुर वाणी आती रहती है।

**स्मृतावायाति ते मृद्धी रसस्निग्धा मधुरवाणी।**
**रतिः सारस्वती याता तनय! ते स्वर्गयात्रायाम्।।**[1]

कवि ने स्वयं का परिचय देते हुए कहा कि कण्टकाकीर्ण पथ पर तीव्रगति से दौड़ने वाला संस्कृत साहित्य के यज्ञ में दीक्षा प्राप्त करने वाला एवं नित्य प्रति सरस्वती के चरणों की वन्दना में लगा हुआ तथा गोखुर की धूलि से जिसकी डेरी पवित्र की जाती है।

**कण्टकाकीर्णेऽपि पथि लब्ध प्रवेगोऽहं मणिः।**
**सुरधुनी साहित्य यागे प्राप्त दीक्षोऽहं मणिः।।**
**प्रतिदिनं गोखुरमृदा ननु पूयते यद–देहली।**
**सोऽस्मि नित्यं शारदाऽर्चन दत्तचित्तोऽहं मणिः।।**[2]

कवि कहता है, कि जिस भाषा में राष्ट्र कल्याण की ही बात कही जाए, जिसकी गाथा को सम्पूर्ण ब्राह्मण्ड के द्वारा गाया जाता है, जिसके ज्ञान रूपी प्रकाश में जन्म लेकर सभी विद्याएँ सुशोभित हो रही है. दुःख भी जिसकी गोद में पड़कर सुख में परिवर्तित हो जाता है, जिसमे निरन्तर वात्सल्य रस प्रवाहित होता रहता है। इस प्रकार संस्कृत भाषा में विकास के लिए युग उद्घोष के रूप में कवि कहता है कि संस्कृत का ऐसा उद्घोष हो। जिससे संस्कृत भाषा समाज से संसद तक चली जाए, हे बन्धुओं! तुम्हारे द्वारा ऐसी सभा का आयोजन हो, जिससे यह सारा अन्धकार कभी न जाने के लिए चला जाय और लोग लोक साहित्य के जानकार हो जाए, और ऐसी जीवनी लिखी जाए, जिससे चारों युगों में तुम विस्मृति के विषय मत बनो और यह हमारी संस्कृत भाषा राष्ट्र भाषा का दर्जा प्राप्त करें।

**चतुर्युगेषु यतस्त्वं न विस्मृतिं यायाः।**
**लिख्यतां जीवनी तथा बान्धवाः।।**[3]

कलियुगीय कौशल से श्रेष्ठ पद को प्राप्त कर राजनेताओं पर कटाक्ष करते हुए कवि अपने अन्तः वेदना को काव्य के रूप में व्यक्त करते हुए कह रहा है, कि हे बन्धु! प्रेमधन को छोड़कर और गौरव को त्यागकर यदि तुम धनी हो तो अपने आप को श्रेष्ठ कैसे समझते हो। समाज की मर्यादाओं का उल्लंघन करते हुए अपने जन्मदाता भरणपोषण कर्ता भगवान का भी उपहास करते हुए हे नेता ललाम! तुम अपने आप को सदाचरण से युक्त समझते हो अर्थात् ऐसे तुम्हारे आचरण से समाज का क्या लाभ?

**सर्वतोऽप्युल्लङ्घ्य मर्यादाऽऽर्दिक हससि प्रभौ।**

**कथय नेतृललाम! सम्प्रति ते सदाचरणेन किम्।।**[4]

प्रणय सौन्दर्य का वर्णन मणि जी ने बड़े ही श्रृंगारिक एवं अनूठे ढंग से किया है। आँखों के सामने आ जाने पर भी तुम्हारे द्वारा उन गीले क्षणों की स्मृति पी ली गयी है, जैसे हम दोनों के बीच सचमुच कोई परिचय ही न हो। हे प्रिय! यह पत्थरों का देश है, जहाँ संवेदनाओं की जड़ता आप स्वयं देख सकती है, अर्थात् वर्तमान समय में शीघ्रता से हो रहे सम्बन्ध विच्छेदों पर दृष्टिपात करना चाहता है कि आधुनिक समय में माता–पिता, पुत्र, पति–पत्नी इत्यादि सम्बन्धों में धैर्य एवं सहनशीलता का अभाव होने के कारण सम्बन्ध विच्छेद हो रहे हैं, इसे देखते हुए यही प्रतीत होता है कि सम्प्रति युग प्रेमराग के लिए उपयुक्त नहीं है।

**अयं प्रस्तराणां प्रियः कोऽपि देशः।**

**स्वंय पश्य संवेदनानां जड़त्वम् ।।**

**इदं दृश्यते साम्प्रतं सप्रमाणम्।**

**न युक्तं युग प्रेमरागाय सत्यम्।।**[5]

कवि समाज में व्याप्त सुख–दुःख, उन्नति अवनति, सम्पन्नता–विपन्नता को देखते हुए स्वयं के द्वारा दर्शाता है। कि जब मेरी समाज में प्रतिष्ठा नही थी, तो मेरी उस अवस्था का समाज में कोई प्रतिष्ठा नहीं थी, सम्प्रति समय जब मैं प्रतिष्ठा सम्पन्न हूँ, तो मेरे सतव्रत को क्यूँ सराहा जा रहा है? इससे यह प्रतीत होता है कि आपकी उन्नति एवं अवनति ही आपको समाज में प्रतिष्ठित करती है।

**क्वचिच्चिन्तिता प्रतिष्ठाऽस्मदीया,**

**न वा सत्कृता साऽप्यवस्था मदीया।**

**कथं साम्प्रतं श्लाध्यते सव्रतं मे,**

**यदऽऽसीदपेक्षा न किञ्चित्कृतं मे।।**[6]

जीवन दर्शन को दर्शाते हुए कवि जीवन की वास्तविकता का परिचय दे रहा है, मणि जी कहते हैं कि प्रातःकालीन स्वप्न लोक में वह कौन सी दीप्ति प्रकाशित हुयी, जिससे रात्रि की सारी वेदना जो मुझमें व्याप्त थी अचानक चली गयी, सम्पूर्ण जीवन में मैं कभी जिसका बन्धु नहीं था, उसकी तरफ से यह कैसी नीराजना निस्यन्दित हो रही है। हे बन्धो! रसोत्सङ्ग में स्थित व्यक्ति के लिए यह लोक नीरस नहीं, यह कैसी नित्य नवीन सारस्वती छटा सुशोभित हो रही है।

**प्रभाते स्वप्न लोके गीतदीप्ति दर्दीपिता क्वासौ।**

**समग्रा वेदनारात्रिः प्रयाताऽपि द्रुतं क्वाऽसौ ।।**

**न बन्धो ! नीरसो लोको रसोत्सङ्गस्थितस्यैषः।**

**छटा सारस्वती संशोभते नित्यं नवा क्वासौ।।[7]**

कवि ने लोक विडम्बना को दर्शाते हुए संस्कृति एवं सभ्यता का समाज में दिन–प्रतिदिन क्षीण होना एवं उसके स्थान पर अर्थ को ही संस्कृति एवं सभ्यता मान लेने पर चिन्ता व्यक्त करते हुए आधुनिक नीतिशास्त्र के ज्ञाता को मात्र लक्ष्मी को ही वैश्विक संस्कृति एवं वैश्विक सभ्यतारूपी परिवार मान लेने पर तथा संसार के सभी सम्बन्ध को अर्थ के ही अधीन दर्शाया है, साथ ही वासना को अत्यधिक तीव्र गति के साथ लोग में नृत्य करता हुआ बताया है। चूँकि नृत्य तो गोपियों का विषय है किन्तु उसका स्थान वासना ने ले लिया है।

इस प्रकार जीवन के विडम्बना को दर्शाते हुए फल की इच्छा के साथ ही कर्म के महत्व को दिखलाया है।

**मणे! यस्मादजसं साम्प्रतं लोकस्य चित्ते।**

**फलेच्छा स्पन्दतेऽसौ शाम्भवीनां प्रार्थनानाम्।।[8]**

## निष्कर्ष

इस प्रकार कवि ने मिट्टी की गन्ध के समान सुगन्धित अपनी इस सौरभेयी गीति संकलना में जहाँ एक तरफ रूप सौन्दर्य का वर्णन किया है वहीं दूसरी तरफ समाज के विविध चिन्ताजनक विषयों पर शोक भी व्यक्त किया है। राष्ट्र में व्याप्त अनीति, भेदभाव लोभ एवं संस्कृति एवं सभ्यता के अभाव पक्ष का वर्णन किया है, वहीं लोको में विद्यमान त्रिदेवों के द्वारा राष्ट्र कल्याण की याचना भी की है। आधुनिक राजनीति पर भी कवि ने अपने पद्यों के द्वारा एक सकारात्मक कटाक्ष किया है। अतः जीवन का ऐसा कोई भी पक्ष नहीं है, जो कवि की दृष्टि से ओझल हो पाया है। अपने पद्यो द्वारा सामाजिक विषमता को दूर करने का कवि ने जो बीड़ा उठाया है, वह निश्चित ही समाज के द्वारा अंगीकृत किया जायेगा।

## सन्दर्भ सूची


1. सौरभेयी पृष्ठा संख्या–86
2. सौरभेयी पृष्ठ संख्या–60
3. सौरभेयी पृष्ठ संख्या–58
4. सौरभेयी पृष्ठ संख्या–18
5. सौरभेयी पृष्ठ संख्या–20
6. सौरभेयी पृष्ठ संख्या–26
7. सौरभेयी पृष्ठ संख्या–30
8. सौरभेयी पृष्ठ संख्या–34